15/9/1966 गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ओम् नमः शिवाय। पितु–मात–सहायक, स्वामी–सखा, तुम ही सबके रखवारे हो। जिसका कोई आधार नहीं, उसके तुम एक सहारे हो.....

ओमशांति। सालिग्रामों प्रति शिवभगवानुवाच्य। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझाए रहे हैं। अभी तुम बच्चे जान गए हो कि हमको यहाँ बैठना है तब अपन को आत्मा समझ करके बैठना है, न कि शरीर। और सारी दुनिया में, कितनी बड़ी दुनिया है, एक भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जो अपन को, अपनी आत्मा को ही समझते हैं कि आत्मा क्या है। जबकि आत्मा को नहीं कोई समझते हैं तो परमात्मा को कैसे समझेंगे! ऐसे बाप द्वारा ही आत्मा का भी रियलाइजेशन होता है यानी समझानी कि सोल क्या चीज़ है? नहीं तो मनुष्यों को ये भी बात नहीं है। इसीलिए देखो मनुष्य दुःखी हैं। तो बाप आ करके इनको आइडल बनाते हैं, ईडियट से एकदम आइडल। आइडल कहा जाता है देवताओं को। अभी तुम बच्चों को ये तो मालूम हुआ कि 5000 बरस की(का) ये जो ड्रामा है या आयु है इस सृष्टि की वा आयु है इस कल्प वृक्ष की, सो तो तुम बच्चों के बुद्धि में। जैसे समझते हो कि बरोबर आम का ... बीज अगर चैतन्य होता तो समझाय देता कि हम बीज हैं, हमारे से झाड़ ऐसे पैदा होते हैं; परन्तु वो तो जड़ है। अभी ये है चैतन्य झाड़ एक ही, मनुष्य का और वैराइटी का। सो तुम बच्चों को, सिर्फ तुम बच्चों को, सो भी याद रखना नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तुमको शुरू से ले करके, ऊपर से ले करके यहाँ तक सारे झाड़ का ज्ञान मिला हुआ है। तुम्हारे बुद्धि में, जैसे बीज में झाड़। वो बाप कहते हैं–मैं बीज हूँ। तो बरोबर सत् है, चैतन्य है और फिर उनको कहा ही जाता है–ज्ञान का बीजरूप है, सत् है, चैतन्य है। कहते ही ऐसे हैं– परमपिता परमात्मा, प्रभु सच्चिदानंद स्वरूप है। ये किसके लिए कहा? निराकार के लिए कहा, जो सत् है, चैतन्य है और आनन्द रूप है। पीछे उनकी महिमा है। जैसे महिमा सुनी। सबसे न्यारी है। अभी ये तो तुम जानते हो कि बाबा की महिमा सबसे न्यारी है, बिल्कुल ही न्यारी है। ये मनुष्य तुच्छ बुद्धि हैं। भले देवताओं को भी बनाते तो हैं आप। ये वर्सा भी देते हैं। पर देखो, फिर कुदरत देखो कि इनको(...)। फिर ये जो तुम्हारे में अभी 5000 बरस की हिस्ट्री और जॉग्राफी का ज्ञान मिला ना। अरे, फिर इनको है नहीं। ये तो वण्डर की बात हुई ना कि तुमको जो अभी ज्ञान मिलता है और तुम्हारी बुद्धि में है कि कैसे ये सृष्टि का चक्कर फिरता है। बाप आते हैं, कैसे इसको नया बनाय बादशाही पुरानी स्थापन करता है। तो तुम बैठी हो, उठती हो, चलती हो; क्योंकि तुम एक्टर तो हो ना। तो तुम एक्टर हो इस ड्रामा के। सिर्फ तुमको इस ड्रामा के आदि–मध्य–अंत और रचता–रचना के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान है। और कोई को नहीं। न शूद्र वर्ण को, न फिर देवता वर्ण को। तो ये कोई सुनेगा तो वण्डर खाएगा ना। यानी ये जो इनको ज्ञान मिलता है सो तो परम्परा चलना चाहिए ना। जैसे ये लोग कहते हैं कि भई, ये जो बड़े दिन होते हैं, त्यौहार मनाते हैं, वो परम्परा से चले आते हैं। कहते हैं ना! अच्छा, अभी तुम जानते हो कि सतयुग में फिर कोई कुछ भी नहीं जानते हैं त्यौहारों को। इनको तो ये मालूम है ना कि फलाना दशहरा आएगा, दीपमाला आएगी, ये रखड़ी–बन्धन आएगी, फलाना आएगी, टीरा आएँगे। अभी ये तो वहाँ किसको भी नहीं आएगा, कोई भी याद नहीं आएगी, कुछ भी याद नहीं आएगी। तुम तो वहाँ निष्फुरने(निश्चिन्त)। इन सब बातों को न समझ तुम तो राज(राज्य) करते रहेंगे। तो तुम्हारी हर एक की बुद्धि का ताला खुला। तुम एक्टर्स हो और तुमको यहाँ जो प्रिंसीपल हैं– क्रियेटर, डायरैक्टर और प्रिंसीपल एक्टर्स, ड्युरेशन अभी तुम्हारी बुद्धि में है ना बच्ची। तुम लिखते भी हो। जो जान गए वो बनते हैं आइडल यानी देवता बनते हैं। तो देखो, तुमको नॉलेज कितनी अच्छी मिलती है! ये तुम्हारी बुद्धि में सारा इस(...) तो दूसरे को हम लिखते हैं ना– तुम जान गए हो, तुम आइडल बन रहे हो।

आइडल कहा जाता है देवताओं के चित्रों को, मूरतों को। तो ये रहना चाहिए ना बुद्धि में। अच्छा, यही जिसके बुद्धि में हो, उनको तो खुशी होगी ना। अपार खुशी होगी ना; क्योंकि इनको इस सारे ड्रामा के, जो बात बाप की बुद्धि में है, गॉड फादर के, जिसको ही कहा जाता है– ज्ञान का सागर, नॉलेजफुल। कौन–सी नॉलेज? कोई बैरिस्टरी की नॉलेज, जजपने की नॉलेज...,कौन–सी नॉलेज? तो कोई समझ सके बच्ची। तेरे सिवाय ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जो ये समझ सके। गॉड को, जो...वर्ल्ड की ऑलमाइटी कहा जाता है, अथॉरिटी कहा जाता है, नॉलेजफुल कहा जाता है, तो नॉलेज किसकी? ये सभी वेदों,शास्त्रों,ग्रंथों, सृष्टि की आदि–मध्य–अंत। शास्त्रों में कोई थोड़े ही ये लिखी हुई है कुछ भी। नहीं, वो शास्त्रों में लिखा हुआ है भक्तिमार्ग की– ये पूजा करते रहो। बाकी कोई सृष्टि में कोई रचता और रचना की नॉलेज है? क्योंकि परम्परा जब ये कहते हैं, वेद वगैरह हैं, तो कोई उनमें तो वो नॉलेज तो नहीं है ना। नहीं है तब तो ऋषि–मुनि आगे वाले कहते आए हैं ना बच्चे कि हम रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत को नहीं जानते हैं। अभी तुमको ये भी आता है कि समझाने वाला ही एक हो, तब जानेगा भई कहाँ से! जबकि हम समझते हैं और फिर ये प्रायःलोप हो जाते हैं। फिर जब दुनिया शुरू होती है, उसी परम्परा से ये नॉलेज चलती नहीं है, चलती नहीं है, तो किसको ये नॉलेज होगी? अभी समझ गए ना मीठे बच्चे। ये नॉलेज सिवाय तुम बच्चों के(...)। कि अभी देने वाला भी तो बाप ही ठहरा, और तो कोई दे भी नहीं सकते हैं। तो देखो, कितनी बड़ी नॉलेज तुमको मिलती है, कितना बड़ा मर्तबा पाते हो, तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बड़े–2 कॉलेज यहाँ होते हैं। देखो, जाते हैं। आगे तो आई०सी०एस० पढ़ने के लिए विलायत में जाते थे और उसके बदले में अभी यहाँ ही कुछ–न–कुछ सीखते हैं। अच्छा, कोई–न–कोई पास करने, ये डॉक्टरी वगैरह जो कुछ है, सब जाते हैं पास करने के लिए, पढ़ने के लिए कोई टीचर से। तुमको क्या नॉलेज मिलती है, देखो तुमको जाना ही नहीं पड़ेगा। ये तो जाते हैं डॉक्टरी सीखने, फलाना सीखने, ये सीखने। तुमको ऐसा बनाते हैं जो न वहाँ कोई डॉक्टर, न फलाना, न टीरा, ये कुछ भी नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि जो बाप जानते हैं, वो सब हम जानते हैं। जो बेहद का बाप जानते हैं, हम सब जानते हैं; क्योंकि हम गॉड फादर के संतान हैं। इसलिए फादर हमको बैठ करके(...)। तो ये मगज तुम लोगों का पूर होना चाहिए ना इस ज्ञान से। बुद्धि में झट वो तो खुशी होनी चाहिए ना कि ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जिसको हम नहीं जान सकते हैं। ये जो भी इतने पढ़ते हैं, ऐऽऽ कुछ नहीं पढ़ते हैं। ये तो जो भी पढ़ते हैं ना, बाबा कहते हैं ना–बच्ची, ये जो कुछ(...)। अभी तुम समझ गए, जो कुछ भी भक्तिमार्ग के इतने शास्त्र वगैरह–2 ये कितना देखो वो पढ़ते हैं.....। मनुष्य मरते हैं तो रामायण, गुरुड़ पुराण फलाना–टीरा क्या–2 रखते हैं। अभी वो तो कोई नहीं जानते हैं। उनमें ऐसा तो कोई नहीं है कि ये सृष्टि का चक्कर कैसे चलता है? ऊपर से ले करके सतयुग सारे झाड़ की नॉलेज, उसकी नॉलेज यानी तुम बच्चे अभी मास्टर नॉलेजफुल ... बनते रहते हो ना। ऐसे भी है नटशेल में, बन तो चुके हो ना। सिर्फ वो जो आत्मा तमोप्रधान है, सतोप्रधान(...)। तो ये भी जानते हो याद करते–2, हमारी बहुत हैं, जिनकी तमोप्रधान से तमो बनी होगी ज़रूर, किसकी तमो से रजो बनी होगी ज़रूर, किसकी रजो से सतो बनी होगी ज़रूर। अभी सतोप्रधान किसकी नहीं बनी होगी; क्योंकि ये विचार की बात है ना। सब ये विचार करने की बात है। नॉलेज है ना, उसमें विचार चलता है कि सतोप्रधान जब बन जाएगी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, पुरुषार्थ तो सभी करते हैं, तब ये हमारा कर्मातीत अवस्था आ जाएगी। फिर हमको नई दुनिया चाहिए राज्य करने के लिए। इसलिए गाया हुआ है कि ये जो विनाश की ज्वाला सारी पुरानी दुनिया, ये कहाँ से इसका ज्वाला निकला हुआ है? भई, इस यज्ञ के बाद, यज्ञ जब पूरा होने का

होगा। तो जब यज्ञ पूरा होता है तो आहुति डाल देते हैं ना बच्ची। तुम बच्चों ने कोई यज्ञ तो देखा होगा। जब समय पूरा होगा ना, जो भी रहा–खुहा हुआ माल–मसाला होगा यहाँ–वहाँ, वो सब मिल–जुल करके पिछाड़ी में सब डाल देंगे। तो अभी तुम बच्चे जानते हो कि ये यज्ञ जब पूरा होगा, तुम्हारी पढ़ाई ज्ञान यज्ञ है ना, तुम्हारी पढ़ाई जब पूरी हो जाएगी और ये होना है ड्रामा के प्लैन अनुसार, जब हम कर्मातीत अवस्था को पहुँच जाएँगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जैसे कोई पढ़ते हैं, जब 12 महीना पूरा होते हैं तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार भई हमको ट्रांसफर होने का है ऊपर क्लास में। तो ये भी तुम्हारा क्या है कि हमारा जब कर्मातीत अवस्था होगा तभी हम इस मृत्युलोक से ट्रांसफर हो करके अमरलोक में चले जाएँगे। देखो, कितनी अच्छी नॉलेज है, फर्स्टक्लास और सो भी कोई नई बात थोड़े ही है। ये बाबा हमको, अभी मालूम पड़ता है बाबा हमको कल्प–2, इस कल्प के संगम पर आ करके ये सारी नॉलेज हमको देते हैं। जो फिर जब हम कर्मातीत बनेंगे(...)। अभी बात हुई ना कर्मातीत अवस्था की; क्योंकि ट्रांसफर होने का है। जब प्योर होंगे तो अमरलोक में जाएँगे; क्योंकि असुल में हम हैं शांतिधाम के रहवासी। पीछे आए अमरलोक में। अभी हमारे 84 जन्म के बाद मृत्युलोक में हैं। ये तो आते हैं ना बच्ची। तो ये बुद्धि में होनी चाहिए ना सारी नॉलेज ज्यों की त्यों, तो खुशी रहेगी ना बच्ची। तो खुशी–2 रहेगी, कि स्मृति में तुमको और कुछ नहीं सूझेगा सिवाय खुशी के; क्योंकि हम अभी, चित्र तो मिलते ही हैं बच्चों को, अभी हम पढ़ रहे हैं और अभी अमरलोक के, नई दुनिया के हम जा करके देवी–देवता बनेंगे; क्योंकि बाप आ करके मनुष्य से देवी–देवता बनाते हैं और ये भी समझना चाहिए कि यहाँ जब हैं पतित तो पतितों को पावन देवी–देवता कौन बनाएगा? देवी–देवता तो कोई यहाँ है नहीं, जो बैठ करके मनुष्य को देवी–देवता बनावे! यानी जो जैसा हो वो दूसरे को बना सके। देवी–देवता तो कोई यहाँ है नहीं। उसमें भी अगर पहले चाहिए देवी–देवता का तो लक्ष्मी–नारायण चाहिए। वो कोई बैठ करके पढ़ाते हैं क्या! यहाँ हैं क्या! होता है क्या कभी? नहीं। ये तुम जानते हो कि इस समय में बाप आ करके पढ़ाते हैं। गाया भी हुआ है कि मनुष्य से देवता। ये कौन बनाएगा? ये राज्य कौन देगा? तो अभी तुम बच्चों को तो नॉलेज हुई ना। सबको समझाय सकते हो ना कि भारत, जो स्वर्ग था और जिसमें ये ल०ना० का राज्य था, ये राजाई सतयुग की, वो किसने स्थापन किया? तो कहा जाता है ना– हैविनली गॉड फादर ने पैराडाइज़ स्थापन किया। पैराडाइज़ किसको कहा जाता है? नई दुनिया को, सतयुग को। सतयुग में राज्य कौन करते थे? भई, देवी–देवताएँ राज्य करते थे। इसलिए भारत को प्राचीन कहा जाता है कि नम्बर वन में भारत था। अभी जब प्राचीन नम्बर वन में भारत खण्ड था तो दूसरा नहीं होना है ना। ये तो बच्चे जान गए हैं ना बच्ची। जिनको भी समझाएँगे...–पहले जब ये थे (...)। देखो, ड्रामा में सब बाप ने समझाया तो है ना। तुम्हारे बुद्धि में है ना, जब हम राज्य करेंगे तब दूसरा कोई नहीं होगा और चंद्रवंश भी नहीं होगा। जब चंद्रवंशी पूरा होगा तब फिर दूसरे–2 (...); क्योंकि बड़ा नाटक है ना। इसलिए नटशेल में, शॉर्ट में (...)। जैसे बाबा समझाया ना– भई ट्रेन होती है, तो मॉडल बनाएँगे, तो पाँच/छः .... इतनी ट्रेन बनाय देंगे। अभी ट्रेन तो लम्बी होती है ना। वैसे ये है तो बहुत बड़ा ना; पर सिर्फ नटशेल में। तुम अभी जानते हो, तुम्हारी बुद्धि में है कि ये हमारा झाड़ है। चैतन्य हो ना। तो हमारा ये झाड़ है और बीज हमारा ऊपर है; क्योंकि चैतन्य हो। सत् हो, चैतन्य हो, आत्मा इम्पेरिशेबल (अविनाशी) है। इसलिए अभी इनको ज्ञान मिला है– बाबा भी इम्पेरिशेबल, तुम भी इम्पेरिशेबल। एक वो बाबा में ज्ञान है सारे झाड़ का। वो तुमको बैठ करके समझाते हैं। अभी तुम्हारे बुद्धि में ये है ज़रूर कि बाबा बीज ऊपर में है और ये झाड़ ऐसे इस भारत का इस समय में सारा फुल खड़ा है और जड़जड़ीभूत अवस्था को पा रहे हैं और

बरोबर इस समय में जो भी मनुष्य मात्र हैं सो तमोप्रधान हैं, काँटे हैं। इसलिए इनको पुराना हो जाने के कारण, सूख जाते हैं ना जैसे कि, तो इसको गाया ही जाता है– भई फॉरेस्ट ऑफ थॉर्न्स, एक/दो को दुःख देने वाला। फिर कहते हैं– भई गार्डन ऑफ ...फादर यानी बागवान। देखो, नाम भी तो गाया जाता है ना... बागवान। तो बागवान क्या आकर... अभी तुमको मालूम हुआ ना बच्चे कि किसको बागवान कहते हैं, किसको खिवैया कहते हैं, किसको माली कहते हैं, खिवैया कैसे ले जाते हैं...। तो सभी खिवैया। अभी देखो, बाबा है खिवैया। तुम भी बोट चलाना सीख रही हो। जाती हो ना बोट चलाने उसमें बैठ करके। ये नैया हरेक की पार कैसे हो, उनको तुम ... बैठ करके समझाती हो। अभी नैया कोई शरीर तो ...नहीं है। पुरानी नैया हो गई है, बिल्कुल कोई काम की(...)। उसमें जो नैया बनी हुई है, किसकी? आत्मा और शरीर की नैया बनी हुई है। दो चीज़ हैं ना बच्ची। अच्छा, नैया मेरी पार लगाएँ। अच्छा, नैया बनी हुई है आत्मा और शरीर की। अब नैया हो गई है पुरानी और शरीर भी हो गया है पुराना। अभी पार कैसे जाए और कहाँ जाए? पार तो कहते हैं, कहाँ जाते हैं? उनको ये तो मालूम नहीं है ना, पार किसको कहा जाता है; क्योंकि उनको मालूम ही नहीं है, मुक्तिधाम क्या चीज़ है, जीवनमुक्तिधाम क्या चीज़ है। बच्ची, कुछ भी नहीं जानते हैं। तुम अभी सब जानते हो। जो कुछ भी वो महिमा करते रहते हैं भक्तिमार्ग में, भक्ति में, तुम उनका अर्थ सब जानते हो। नैया का समझ गए हो, जीवआत्मा बरोबर पार ले जाते हैं। कहाँ पार ले जाते हैं? यहाँ दुःखधाम है, सुखधाम में ले जाते हैं। तो पार हुआ ना! अर्थात् इस विषय सागर से तुम खीर(क्षीर) सागर में जाने वाले हो। तो इसका कोई यथार्थ रीति से अर्थ तो कोई नहीं जानते हैं ना। सिर्फ गाते हैं– नैया मेरी पार लगाओ। अच्छा, ओ बागवान आओ, आ करके हमको कांटे से फूल बनाओ। पर ये तो सिर्फ महिमा, भक्ति करते हैं ना। बाकी प्रैक्टिकल में तो वो लोग बिचारे कुछ भी नहीं जानते हैं ना। तुम देखते हो ना, तुम भी कल कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बरोबर तुम बच्चे जानते हो कि हम सारे रचता, ऊपर से ले करके, ...सारे मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन के, सतयुग से ले करके कलहयुग और संगमयुग, इन सब राज़ों को हम जान गए हैं। जबकि जान गए हैं, जो जानते हैं वो सुनाते हैं ना। तो फिर जब तुम जान गए हो, तुम क्यों नहीं सुनाते हो सब? क्यों कहते हो कि भूल जाते हैं, ये करते हैं, वो करते हैं और क्यों नहीं तुम्हारे अन्दर में सदैव ये टपकता रहें जो तुम सदैव खुशी में रहो। इसमें फिर कोई भी चिंता ही नहीं होती है। कोई है फिक्र? बाबा... – फिक्र से फारख(फ़ारिग), स्वामी किंदा सद्गुरु। अभी तो तुमको मालूम है, बाबा आया हुआ है और हमको ले जाते हैं। हम तो बाबा जैसे बन गए हैं बिल्कुल ही। जो बाबा समझाते हैं, जो बाबा है, जैसे कि हम वो बन गए। देखो, जैसे बच्चा होता है तो बाबा बन जाते हैं ना। तो तुम भी जैसे बाबा बन गए हो ना। बाबा नॉलेजफुल है तो तुमको भी आकर नॉलेजफुल बनाया है, तो बाबा नहीं बन गए क्या! एकदम फुल नॉलेज ले करके। तुम जानते हो जो बाबा में नॉलेज है। तो आत्मा और परमात्मा का है ना अपना कनेक्शन। तब तो आत्मा कहती है अन्दर में। देखो, ये आत्मा कहती है ना। कहते हैं कि जो बाबा में नॉलेज है, बाबा ने हम आत्मा को, अपने बच्चे को (...)। तो रूहानी बाप ने रूहानी बच्चे (...)। तो यहाँ नई बातें हैं ना बच्ची। सिवाय बाप के और...दूसरे बिगर तो तुम सुन नहीं सको और बाप भी कौन–सा? वो निराकार बाप। वो आ करके इसमें साकार के आधार से। साकार के आधार से तुम भी सुनती हो ना। नहीं तो साकार, वो आत्मा अलग होय, तो तुम सुन भी न सको ना। तो तुमको सब कुछ, तो गोया वो अपन बच्चों को आप समान कराते हैं। जैसे बाबा की महिमा गाई जाती है– ज्ञान का सागर है, पतित–पावन है, दुःखहर्ता, सुखकर्ता है। जो भी उनकी महिमा है वो तुम्हारी हुई ना। जो तुम भी वही सर्विस करते हो ना। कोई फर्क तो

नहीं। फिर भी बाबा कहते हैं मेरे और तेरे में बाकी फर्क क्या रहता है? कि हम जन्म–मरण में नहीं आते हैं, तुम बच्चे सारे जन्म–मरण में आते हो। बस, फर्क ये है। और इस समय जब मैं तुमको ज्ञान देता हूँ सो मेरे पास जो भी वर्सा है (...); क्योंकि देते हैं ना। मुझे कहते हैं ज्ञान का सागर, तो मुझे ज्ञान देना है ना तुम बच्चों को। भई सुख का सागर, मुझे सुख देना है ना तुमको। पवित्रता का सागर, तो मुझे तुमको सुख देना, मिल रहा है ना, दे रहा हूँ ना। तो बोलता है–कल्प–2 मैं देता हूँ ना। अभी तुम जान गए कि फिर 5000 वर्ष बाद ये सारा चक्कर, जो तुम देखा, सो सभी चक्कर फिरेंगे। फिर भी आएगा मेरे पास। अभी तुम्हारे बुद्धि में है ना– बरोबर 84 का चक्कर खाय करके हम फिर आते हैं, बाबा आते हैं हमको 84 के चक्कर से फिर पहले नम्बर में ले जाते हैं, फिर हम चक्र... पहले में। अभी ये नॉलेज तुम बच्चों को मिल रही है। फिर भी नॉलेज है ना। तो नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इन्कम। ये तो गाया ही जाता है बरोबर और ये इनकम भी होती है ज़रूर। जो पढ़ते हैं, जितना पढ़ते हैं, इतनी नॉलेज से इनकम भी होती है। भले इनकम धंधे से भी होती है; पर ये धंधा भी तो है ना। नॉलेज की नॉलेज है, धंधे का धंधा है; क्योंकि ये भी तो धंधा करते हो ना। बाबा सर्राफ है। जैसे वो देते हैं ना, रुपया दे करके पैसा मटा–सट्टी करते हैं। तो तुम क्या देते हो? कुड़ा–कचरा तुम्हारे पास जो है ना, वो सब दे करके बाबा को (...), कचरा है ना। मरने का समय जब होता है तो करनीघोर को (...)। वो तो मरते हैं तब देते हैं। तुमको जीते जी देना है। समझा ना! मरने के बाद देने से क्या होगा! तो क्या, मरता है तब देते हैं– खटोला, पुराना मंझा वगैरह–2 सभी ये देते हैं ईश्वर अर्थ। अभी ईश्वर को मंझा और खटोला फलाना देते हैं ना। जब गाते हैं तब हमेशा कहते हैं ईश्वर अर्थ। ईश्वर को पुराना ये तिगड़ियाँ–फगड़ियाँ, ये सब कोई(कुछ) दिया जाता है ना। नहीं पर है अभी की बात। बाप कहते हैं जो तुम्हारे पास अभी है ना, वो सभी तुम मरने के पहले ही हमको दे दो। मर जाएगा तो तुम्हारा ये जो पुराना जूता–खटोला तुम्हारे पास है, वो भी तुम्हारे काम में नहीं आएगा। इसलिए जो तुम्हारे पास है (...), तुम्हारे पास क्या है? समझो कोई है, अच्छा! बिरला है। बरोबर वो ज्ञान नहीं लेंगे, ये भी बाबा कह देते हैं। ऐसे–2 आदमी नहीं लेते हैं। पर क्या है उनके पास? क्योंकि भले साहूकार कितना भी है; परन्तु साहूकार कितने दिन के लिए है? ये एक जन्म के लिए है ना! कमाई की है, पीछे तो शरीर छोड़ देंगे ना। पता नहीं कैसा कर्म किया है, कहाँ जा करके जन्म लेंगे; परन्तु तुम तो जानते हो ना कि बच्चे, ये बाबा से तुम 21 जन्म के लिए, जितना जो पुरुषार्थ करेंगे अपनी सर्विस का, अपनी भी सर्विस, दूसरे की भी सर्विस (...)। तो बाप ने समझाया ना– बच्ची, ये है रूहानी सर्विस। सारी दुनियाँ जानती हैं जिस्मानी सर्विस को। ये जो भी इस समय में काँग्रेस की सर्विस है, वो सब है जिस्मानी सर्विस। रूहानी को कोई नहीं जानते हैं बिल्कुल ही कि कोई रूह आ करके, नाम डालते हैं ना कृष्ण का, जो सुप्रीम रूह आ करके (...)। अभी सुप्रीम रूह का जन्म भी मानते हैं बरोबर, जिसको हम कहते हैं– शिवाय नमः, ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शांति का सागर और दुःख हर्ता, सुख कर्ता। अच्छा, उसका नाम शिव है ना। उनकी जयन्ती भी तो मनाते हैं ना। तो देखो, कुछ बुद्धि में बैठता है? ज़रूर भला वो आया होगा जिसकी इतनी महिमा करते हैं। तो भारत को दिया (...)। अच्छा, भारत था ज़रूर ना ऐसे बरोबर। ऐसे तो नहीं कि नहीं था। था भारत। तो अभी तुम जानते हो कि बाबा आ करके ये सभी राज़ हमको 5000 बरस के बाद फिर सुनाएँगे। बस, पीछे ये जो ज्ञान है, कभी भी, न सतयुग में है। जब सतयुग में ये ज्ञान का पता ही नहीं लगता है तो कलहयुग में क्या लगेगा! सतयुग में जबकि सतोप्रधान है आत्मा, उनमें भी ये ज्ञान नहीं है; क्योंकि ज्ञान से तुम वो बनते हो। तो ये नई बातें हैं ना बच्ची सुनने की। तो ये कैसे बनें? अभी तुम जान गए, ऐसा कोई है दुनियाँ में,

लक्ष्मी–नारायण (का) जो मंदिर बनाते हैं वो कोई जानते हैं कि ये लक्ष्मी–नारायण का मंदिर हम क्यों बनाते हैं? ये स्वर्ग के तो हैं; परन्तु स्वर्ग में क्या नई सृष्टि रची गई जिसमें इनका राज्य था या ये इनको दिया किसने? क्योंकि अभी तो कहेंगे ना बच्ची कि ये कर्म का फल है। अभी कर्म का फल है तो बाप...समझाते हैं कि कर्म,अकर्म,विकर्म की गति मैं तुमको समझाता हूँ। अभी समझाता हूँ। वो तुम जानते हो कि भविष्य में ये बनेंगे। तो ज़रूर इसके आगे जन्म में कर्म,अकर्म,विकर्म की गति ज़रूर इन डिनायस्टी ने समझी होगी ना। किसने उन्हें समझाया? भगवानुवाच्य यही गीता और जानते भी हैं– गीता से आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। अभी आदि सनातन देवी–देवता धर्म तो सतयुग का हुआ। अभी उनमें तो मनुष्य थोड़े। बाकी भला तभी इतनी जो पुरानी सृष्टि वो कहाँ चली गई, जो ये सतयुग में आकर खड़ा हुआ? वो ज़रूर विनाश को पाया होगा। कुछ हुआ होगा, विनाश भी ऐसा हुआ होगा, जो इतने करोड़ों मनुष्य चट (...)। तो महाभारत की लड़ाई है, सो तो लगी हुई है। कि बरोबर ये सब, जैसे सरसों पीसी जाती है (...)। इसके श्लोक हैं बच्ची। बाबा को थोड़ा भूल गए हैं। नहीं तो इनके सबके श्लोक। कहे गिरधर कविराय। अभी गिरधर तो कहा जाता है कृष्ण को। समझा ना! तो कवि उनको ही कहा जाता है। पर गिरधर तो कवि नहीं है ना। ये समझा, कवि कौन है? शिवबाबा कवि है ना। गिरधर तो कवि नहीं है। कवि कहा जाता है सुनाने वाले को। ...ये जो भी तुम इतने मनुष्य देखते हैं, अभी आत्मा की तो पीसने की दरकार ही नहीं है। बाकी सभी, जैसे जांडर(ग्राइंडर) में वो सरसों पिसती है ना, तैसे ये सभी शरीर पीस जाएँगे। अभी जांडर(ग्राइंडर) में तो पीसने की चीज़ है नहीं। ये तो जानते हो कि इन सबके ऊपर आफतें आएँगे, ये आएँगे, वो होंगे। कोई तो हुआ होगा ना, जिससे ये पुरानी दुनियाँ खत्म हुई होगी। तो देखो, पुरानी दुनियाँ खत्म होने के लिए ये कितनी चीज़ें बन रही हैं। तो तुम जभी समझाते हो, बोलो– ये तो नई बात नहीं है ना, ये बॉम्ब्स किसलिए हैं, ये मिसाइल्स हैं, ये तुम्हारे महाभारत वाली लड़ाई है। जबकि भगवान आ करके रुद्र ज्ञान यज्ञ, जिस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ये विनाश की ज्वाला प्रज्ज्वलित होती है; क्योंकि यज्ञ है, भगवान रचते हैं। किसलिए? भगवान यज्ञ रचते हैं कि यज्ञ रचा ही जाता है सुख और शांति के लिए। अभी भगवान खुद आ करके यज्ञ रचते हैं। तो भगवान तो ज़रूर सुख–शांति स्थापन करेंगे ना। तो बाकी जो दुःख है, अशांति है, वो विनाश होना चाहिए ना। तो ये विनाश होने के लिए ही कहा जाता है कि ईश्वर के इस ज्ञान यज्ञ में, जबकि सबका दुःख हर्ता, सुख कर्ता आते हैं, इस ज्ञान यज्ञ में ये सारी सृष्टि स्वाहा हो जाएगी। तो बरोबर ये तो बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में तो बैठीं ना अच्छी तरह से कि हम ब्राह्मण हैं, इस यज्ञ के सर्वेंट्स हैं। ...शिवबाबा के यज्ञ के हम ब्राह्मण, ब्रह्मा और ब्रह्मावंशावली, हम बरोबर इस यज्ञ के सर्वेण्ट्स हैं और ब्राह्मण हैं। सो भी सच्चा ब्राह्मण, मुखवंशावली ब्राह्मण, वो कुखवंशावली नहीं हैं। तो मुखवंशावली हैं तो जो बाबा मुख से कहें वो हमको मानना पड़े; क्योंकि श्रीमत से हम जानते हैं, तुम जानते हो– मनुष्य तो गाते हैं– श्री–2 की मत से, भई श्री रुद्र की माला में पिरोए जाएँगे। बस, माला सिमरते हैं, ज्ञान तो कुछ है नहीं और ऐसे भी ज्ञान नहीं है कोई श्री–2 के मत से रुद्रमाला में पिरोए जाने हैं। तुम जानते हो कि श्री–2 शिवबाबा के मत से, ये प्रैक्टिकल से, कोई धारणा–वारणा की तो बात नहीं ना, हम श्रेष्ठ बन करके और माला के दाना बनेंगे। माला के दाना बनेंगे, कैसे ये माला का? माला का दाना कहा ही जाता है सिजरे को। देखो, वो सिजरा बनते हैं ना। वो तो जैसे माला बनी ना। तुम देखा है ना ये भई वासवानी। वासवानी के पीछे ये तीन बच्चा, पीछे तीन बच्चे का ये बच्चा, ये बच्चे करके, ऊपर से एक हो करके फिर इतना हो जाते हैं झाड़। बहुतों के पास घर में रहते हैं। ये अनुभवी है ना। हम खुद अपने हाथ से सिजरा बनाया है, अपने

कृपलानियों का कॉपी की है। जो कॉपी हम खुद किया है। यानी तो अनुभव भी तो है ना। तो तुम भी ऐसे ही देखो, अनुभव से वो बनाया हुआ है–ऊपर में शिवबाबा निराकारी, पीछे देखो वो सिजरा बना हुआ है। वो सिजरा किसका है? भई, निराकारी सिजरा है। जो निराकारी सिजरा है सो फिर साकारी सिजरा होता है। इसलिए गाया जाता है भई पहले–2 नंबर में, मनुष्य सृष्टि के पहले नंबर में कौन है? पहले नंबर में प्रजापिता, तो वो है जिस्मानी, वो है रूहानी। रूहानी आ करके प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ये रचना रचते हैं। अभी नई रचना नहीं रचते हैं; क्योंकि बुलाते ही हैं तब जबकि कहते हैं– हे पतित–पावन आओ! इस पतित दुनियाँ को पावन, पुरानी दुनियाँ को नई बनाने के लिए आओ; समझा ना! क्योंकि प्रलय तो होती नहीं है ना। बाप ने समझाया– प्रलय नहीं होती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी, वो रिपीट करती है। उसका ये अर्थ नहीं हो सकता है कि पुरानी खतम हो जाती है। तो फिर कहेंगे, नई बनती है। नहीं, इसमें गाया ही जाता है कि वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी। अभी तुम बच्चों को मालूम हुआ कि 84 जन्म का चक्कर सो फिर से फर्स्ट से शुरू हो जाते हैं, जिसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो बच्चे। तो बरोबर हम इस नॉलेज से, जो बेहद की नॉलेज है, बेहद का बाबा देते हैं और बेहद का बाबा से तो बेहद का वर्सा मिलेगा। वो तो बाबा ने समझा दिया है। हद का वर्सा होते हुए भी तुम बेहद के बाप को याद ज़रूर करते हो। ...साहूकार नहीं याद करते हैं! उन बिड़ला को पता नहीं है ये लक्ष्मी–नारायण कौन हैं; परन्तु याद तो करते हैं ना कुछ, हे भगवान भी तो कहते होंगे ना। अभी हे भगवन! ये तो कोई भगवन तो नहीं है ना। जब हे भगवन कहा जाता है तो आत्मा कहती है और निराकार याद पड़ता है। हे ईश्वर, हे प्रभु, तो बच्ची कोई भी चित्र याद नहीं आते हैं। नहीं, चित्र याद होते हैं। वो तो चित्र यहाँ हैं बहुत ही। पूजा करते हैं ना। यहाँ बैठ करके, जब कोई मरते भी हैं तभी उनको कहते हैं– भगवान को याद करो, भगवान को याद करो, गॉड फादर को याद करो। तो फादर है ना बच्ची। तो फादर, तो फिर दो फादर तो सिद्ध हो जाते हैं ना बच्ची। इससे भी सिद्ध होता है–वी आर ऑल ब्रदर्स। अभी वी आर ऑल ब्रदर्स तो आत्मा के लिए ही कहते हैं ना... । वी ऑल ब्रदर्स सभी पुकारते हैं कि हे पतित–पावन, हे दुःख हर्ता, सुख कर्ता, हे लिबरेटर, आओ! हमको गाइड करो, हमको घर ही भूल गया है। घर याद है, पर हम जा नहीं सकते हैं। ज्योत भी जगाते हैं, ऐसे भी कहते हैं, तमोप्रधान से सतोप्रधान भी बनते हैं। तो क्या होता है अभी जबकि, अभी अपनी ज्योत को जगाना है। हमको अभी जाना है। अंधियारा है ना, तो सोझरा चाहिए ना। तो अपनी ही आत्मा को वहाँ से लगा जाने से, योग लगाने से घृत पड़ता जाता है। फिर वो बत्ती जो ठण्डी हो गई है ना, प्रायः ठण्डी, उझानी नहीं जाती है, नहीं बच्ची; क्योंकि आत्मा अविनाशी है ना, इसलिए उसको कभी भी ऐसा नहीं कहेंगे– सारी उझानी गई है। है ना। जैसे वो होती है, पिन्नी पाई जाती है। दृष्टान्त भी हैं ना बहुत। वो मत्था करते हैं ना, बारह दिन बैठाते हैं, दीवा जलाते हैं। पीछे अगर किसका दीवा बुझ जावे, तो बोलते हैं– वो बिचारा अंधेरे में... और घी डालते रहो। इसलिए एक को मुकर्रर किया जाता है। देखते रहो, घी डालते रहो, देखते रहो, घी डालते रहो, नहीं तो अंधियारा हो जाएगा। तो ये तो जानते हो अभी अंधियारा हो गया है। अभी तुमको घृत डालना है आपे ही। घृत कौन–सा डालना है? योगबल का। योगबल से तुम्हारा दीवा एकदम जग जाएगा, दीवा लाल हो जाएगी। अभी दीपमाला थोड़े ही है। अभी तो घोर अंधियारा है। पीछे सोझरा हो जाएगा, दीपमाला हो जाएगी। तो दीपमाला उसको कहा जाता है– घर–2 में सोझरा। अभी घर–2 में सोझरा, सो दीपमाला कहाँ होगी? सतयुग में। यहाँ नहीं। ये जो उत्सव मनाए जाते हैं ना, इनका भी तुमने सब रहस्य अच्छी तरह से समझा। नो ब्लाइण्डनेस अभी तुम्हारे पास। दूसरे के पास सब ब्लाइण्डनेस हैं। रखड़ी बांधने जाते

हो तो जैसे ब्लाइण्ड को रखड़ी बांधने जाते हो, अर्थ कुछ थोड़े ही समझते हैं। दिल में जानते हो– ये मुआ समझता कुछ थोड़े ही है। बाकी बातें पवित्रता की करो, तो वो समझते हैं ये आए हैं, ब्राह्मण होकर रखड़ी बांधती है। ये इनको 10 रुपया खर्ची दे दो। ब्राह्मणों को एक पैसा देते हैं ना, चलो। बाकी हैं तो ब्लाइण्ड। तुम जानते हो, ये समझते तो हैं ना ...ब्लाइण्ड को, ये अंधे एकदम, इनको हम बाँधते हैं, समझते कुछ थोड़े ही हैं; परन्तु फिर भी तो इनको समझाया जाता है थोड़ा कि रखड़ी बाँधते हैं कि पवित्रता में रहने के लिए; क्योंकि भ्रष्टाचार कहा ही जाता है ये पतित को। अभी जब कहा ही जाता है पतित को भ्रष्टाचार, तो वो तो समझेगा ना भई– हम भ्रष्टाचारी हैं, हमारे बाल–बच्चे सभी भ्रष्टाचारी हैं। ऐसी युक्ति से उनको इंजेक्शन लगाना चाहिए कि फील करे कि ये हमको कहते हैं कि तुम भी भ्रष्टाचारी हो, तुम्हारे बाल–बच्चे क्रियेशन सब भ्रष्टाचारी हैं और बाबा कहते हैं कि नहीं, अभी श्रेष्ठाचारी कहा जाता है, जो पावन रहता है और फिर बाप को याद करते हैं। सो बाप कहते हैं– मन्मनाभव, मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएँगे, पतित से पावन बन जाएँगे। ये अक्षर कोई भी हो, उनको युक्ति से बता देना, तीर लगा जाने दे। इसमें कोई इनसल्ट–फिनसल्ट की कोई बात ही नहीं, ये तो यथार्थ है; परन्तु वो पावर चाहिए, अच्छी हिम्मत चाहिए समझाने की। बाकी नहीं तो बिचारे कुछ समझते थोड़े ही हैं। कुछ भी नहीं, बस बाबा कहते हैं ना– जैसे बंदरों के आगे वो रत्न डालो, ये भी दृष्टान्त तो है ना, तो बस वो बोलता है उठा करके फेंक देते हैं। वैसे ही ये है। तुम बंदरों की दुनियाँ से निकल करके मनुष्यों की दुनियाँ में आई हो। फिर तुम देवता बनती हो। इतना फर्क है रात–दिन का! तुम्हारी बुद्धि में ये है बरोबर कि ये सब जो कुछ हम लोग देखते हैं, ये तो पाँच विकार वाले ये सभी, शिकल बरोबर है, ये हमारे जैसी है, मनुष्य हैं, पर ये सब बंदर से भी बदतर एकदम। अभी बाबा आ करके हमको मंदिर में बैठने लायक (...)। अभी मंदिर में, ऐसे मत समझो कि भक्तिमार्ग में हम मंदिर में बैठेंगे। ना–ना। अरे, ये शिवालय है ना, ये तो बड़ा मंदिर है ना, चैतन्य मंदिर तो वो है। तुमको यहाँ वैश्यालय से निकाल करके शिवालय में बिठाते हैं यानी सतयुग में बिठाते हैं। शिवालय को, बाबा भक्तिमार्ग की नहीं कहते हैं, शिवालय इस सारी दुनियाँ को कहते हैं, तुम अभी वैश्यालय से शिवालय। तो शिवालय मंदिर हो गया ना। शिवबाबा की स्थापनाय ये बड़ा ये सारी सृष्टि यानी बड़ी तो होती नहीं ना, फिर छोटी हो जाती है ना, वहाँ तो मनुष्य होते नहीं। तो तुम जा करके शिवालय में रहते हो; क्योंकि शिवबाबा के बच्चे हो। तो बाबा तुमको सतयुग रूपी शिवालय में बिठाते हैं। क्या कहते हैं, ये नर्क जो वैश्यालय है, वहाँ से निकलना है। देखो, कितनी है और कितनी फिर बताते हैं। देखो कितनी दुब्बण में फँस गए हो एकदम। ये भक्तिमार्ग की चहचटा(दिखावा), कितना चहचटा है भक्तिमार्ग का देखो। ताली, नाच, तमाशा, चित्र वगैरह क्या–2 करते हैं। तो इसको कहा जाता है, अभी दुनियाँ में तो कोई नहीं जानते हैं ना कि भक्तिमार्ग की बड़ी चमकीली, अच्छी देखने में सुहेनी, ये दुब्बण है। निकालने में कितनी मेहनत लगती है। निकलती ही नहीं है। एकदम भक्तिमार्ग को दुब्बण ही कहा जाता है। दुब्बण का फिर बताया है कि जब ये सागर की ... हैं ना पानी में, तो वो चमकता है, हिरण का मिसाल दिया है, प्यास लगती है उनको जंगल में, तो सामने दुब्बण ये देखते हैं ना, चमकता है, वो समझते हैं पानी है। सूर्य के उससे होता है ना, तो चमकता है, वो समझते हैं पानी है। दौड़ते हैं, वहाँ ... दुब्बण में फँस जाते हैं। ये मिसाल देते हैं। सो मिसाल कोई उनके लिए थोड़े ही देते हैं। नहीं, मिसाल तो ये बेहद का मिसाल है। ये भक्तिमार्ग कितनी सुहेनी है। भक्ति में कितने लय होते हैं, उफ! बात मत पूछो। भक्ति में जो लय होते हैं सो बस वहाँ ही तुम लोग, जैसे कल रास करते थे ना, बस, रास करते, कृष्ण के रास करते–3 वो ध्यान में चले जाते हैं,

सच्च–2 वो उसमें जा करके डांस करने लग जाते हैं। ऐसे बहुत होते हैं। समझा ना! भगत जो तीखे होते हैं ना, नशा चढ़ जाते हैं, मस्त हो जाते हैं एकदम किस–2 को; क्योंकि वो भावना का भाड़ा मिलता है ना, तो मिल जाते हैं; परन्तु उनसे तो कोई फायदा तो है नहीं। ऐसे तो कोई भक्तिमार्ग में मनुष्य नहीं हैं ना बच्चे। तुम भी भक्ति की है। भक्ति तो सबने की है बहुत अच्छी जन्म–जन्मांतर; परंतु अभी तुम्हारी बुद्धि में क्या है! हूबहू जैसे बाप को समझते हो, तैसे जैसे कि बाप ने हमको सारी नॉलेज दी है। जो अथॉरिटी है। हम अथॉरिटी हैं। हम सभी इन वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों,फलानों–टीरों इन सबका सार जानते हैं अच्छी तरह से। अच्छा, सर्वशक्तिवान हो; क्योंकि तुम बाबा से ये माया पर जीत पहन करके तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हो। सर्वशक्तिवान हो, क्या बनते हो सर्वशक्तिवान? किंग एण्ड क्वीन ऑफ विश्व। कहाँ से ये शक्ति आई? किसी से लड़ाई की? किससे भी नहीं। शक्ति ली बाप से। तो बाप से वर्सा लिया ना सर्वशक्तिवान का। सर्वशक्तिवान को, विश्व का राज्य करते हो, तुम्हारे को कोई जीत सकते हैं? है किसकी ताकत, जो तुम्हारे एक ज़रा इंच कोई जीत सके– इस आकाश का या पृथ्वी का, वायु का? तो बाप बैठ के– बच्चे–2, तुमको देखो क्या बनाता हूँ! क्या से क्या बनाता हूँ और फिर कहता हूँ कि बच्चे देखो, ऐसे बनाने वाले को याद करना है, याद करना है, तो तुम्हारा विकर्म विनाश हो; क्योंकि मुझे ही तो तुम पतित–पावन कहते हो ना, तो मैं युक्ति बताता हूँ। बुद्धि से विचार करो और कोई युक्ति हो सकती है सिवाय इसके; क्योंकि गाई भी गई है शास्त्र में मन्मनाभव की, मामेकम् याद करो, अंत मते सो गत। दृष्टान्त देते हैं कि ...था वो बोला– कोठरी में बैठ जाओ, तो मैं हूँ, मैं हूँ, मैं हूँ, मैं बन करके ये बहुत दृष्टान्त है ऐसा। पीछे वो खिड़की थी, वहाँ से अरे, मेरा तो सिंग बड़ा है, हम तो निकल नहीं सकते हैं, कैसे निकलूँ? तो यानी जैसा चिंतन किया जाता है वो ऐसा बन जाते हैं; परन्तु वो तो है दृष्टान्त। ये जो अभी बाप ने बताया है, उनका उन लोग ने बैठ करके दृष्टान्त बताया। तो यहाँ बाप कहते हैं बरोबर मन्मनाभव–मद्याजीभव, तुम मुझे याद करते–3 चतुर्भुज बन जाएँगे। भई चतुर्भुज तो कोई यहाँ तो नहीं बन जाएँगे ना। तो ज्ञान है ना बच्चे...। तो अंत मते सा गत। ये गाया जाता है कि याद करने से विकर्म विनाश हो जाएगा, तुम घर चले जाएँगे और ये जो नॉलेज तुमको मिलती है, नॉलेजफुल बनते हो, नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इनकम और याद इज़ सोर्स ऑफ हैल्थ। तो हैल्थ एण्ड वेल्थ जब दोनों है, तो हैप्पीनेस है। देवताओं को तो बिल्कुल ही हैप्पीनेस है। हेल्थ भी है तो वेल्थ भी है और अपार है और कितनी बड़ी आयु होती है। इसलिए कृष्ण को महात्मा कहते हैं। समझा ना! अभी योगेश्वर कृष्ण को नहीं कह सकते हैं। योगेश्वर और योगेश्वरी तुमको; क्योंकि ईश्वर तुमको योग सिखला रहे हैं। जैसे जगदम्बा, तो उसको कहा जाएगा योगेश्वरी। योगेश्वरी सा राज–राजेश्वरी; क्योंकि ये है राजयोग। इसलिए योग लगाने से तुमको राजाई मिलने की है। इसलिए इस समय में हो तुम योगेश्वरी, पीछे बनेगी राजेश्वरी। किससे मिलता है, ये योग और राज्य कौन देता है? ईश्वर देते हैं। योग सिखला करके ईश्वर तुमको राज्य देते हैं। इसलिए कहा जाता है योगेश्वरी और वही योगेश्वरी और योगेश्वर तुम हो ना बच्चे। सो तुमको ईश्वर योग सिखला रहे हैं। तो इस समय में तुम योग ईश्वर द्वारा सीख रहे हो। किसलिए? फिर बनेंगे राज–राजेश्वरी या राज–राजेश्वर; क्योंकि ईश्वर ने तुमको ....। तो ये है राज–राजेश्वर। इनको किसने राज्य दिया? अभी तुमको मालूम पड़ा बाप ने दिया, ईश्वर ने दिया। कैसे दिया? सो तो तुम अच्छी तरह से जान गए हो, समझ गए हो अच्छी तरह से। तो ये धारणा चाहिए ना। कोई बड़ी बातें लम्बी–चौड़ी तो नहीं हैं। अर्थमैटिक्स तो नहीं है, ग्रामर तो नहीं है। वो पता नहीं भला क्या वो बहुत सिखलाते हैं। तो वो तो डिफीकल्ट है ना बच्ची। जितना–2 बड़ा पढ़ते हैं, कितनी सब्जेक्ट्स

होती हैं! बहुत सब्जेक्ट्स होती हैं। इसमें क्या सब्जेक्ट है? दो सब्जेक्ट– अल्फ एण्ड बे। नो अदर सब्जेक्ट। उसमें भी अलफ में बे समाई हुई है। बाप में वर्सा समाया हुआ है। इसलिए फिर भी कहते हैं– अच्छा, अलफ को याद करो, वर्से को याद करो। बाप को याद करो, वर्से को याद करो। तो बस ये याद करने से पाप भी कट जाएँगे और बाप के पास पहुँच करके राजाई ले लेंगे, जो बिल्कुल सिम्पुल है। अच्छा चलो, भोग लगाओ, जाने वाली हैं बच्चियाँ। साधु,संत,महात्मा में(को) कुछ भी पता नहीं है। तुम तो हूबहू यानी हम बच्चे हैं ना, भगवान के बच्चे हैं ना हम, तो मास्टर गॉड ठहरे ना। तो मास्टर गॉड ठहरे तो मास्टर गॉड क्या, हमको वहाँ ही बैठना है क्या बाबा के पास? नहीं, हमको तो पार्ट बजाना है ना। बनते हो; क्योंकि जाएँगे, बाप के साथ जा करके बैठेंगे वहाँ। फिर वहाँ तुम्हारी ये नॉलेज पूरी हुई, फिर उनकी प्रालब्ध तुम्हारी शुरू हुई ये तुम्हारे आत्मा के रिकार्ड में, फिर रिपीट करेगा। जैसे ये रिकार्ड पूरा होता है ना, बस वहाँ जाने से ही, वहाँ आओ, फिर तुम जानते हो कि तुम्हारा रिकार्ड सुख का शुरू होगा। फिर यहाँ आएँगे तो ज्ञान सब भूल जाएँगे, आकर राज्य करेंगे। देही अभिमानी बहुत बनने का पुरुषार्थ करना पड़ता है। तो बाप याद आएँगे तो फिर इनको क्या परवाह रखी है। ये तो जैसे बाबा है कालों का काल तैसे हम भी कालों का काल हैं, हमको डरना किससे है। हमको तो जाना है घर शरीर छोड़ करके, कोई दूसरी बात ही नहीं है। हाँ, गो सून कम सून, बच्चे जाने वाले हैं।

गीत :– आज पुकारे, आ जा–2 प्रेमदुलारे, आना ही होगा.....

एक का भी यहाँ एक/दो में प्रेम नहीं है; क्योंकि एक/दो के ऊपर काम–कटारी चलाते हैं; क्योंकि आदि,मध्य,अंत दुःख देती है। बस, नंबरवन बात हुई ना। फिर वहाँ ऐसा कोई भी नहीं करते हैं। तो ऐसे यहाँ कोई प्रेम हुआ? वहाँ प्रेम–दुलार तो सतयुग में है। प्रेम सच्चा–2 तो वहाँ है, यहाँ प्रेम कहाँ है। ये तो खून एक/दो को करना होता है। इतना बाबा ने इसके ऊपर समझाया है– ये काम के ऊपर और मनुष्य कहें– वाह! वहाँ भी तो सृष्टि रचते होंगे ना। उस बिगर काम कैसे चलेगा! ऐसा मत्था खपाते हैं।

गीत– पुकारे आना ही होगा.....

कब से नंगा आना, कब से नंगा जाना, अर्थ किसको जानते हैं बच्ची? कोई भी नहीं जानते हैं, उसका अर्थ ही कोई नहीं जानते हैं बिल्कुल ही। तुम अभी जानते हो कि नंगे ही हमको आना है। यहाँ आ करके शरीर धारण करते हैं। फिर निर–आकार से निराकार माना नंगा, बिगर शरीर। पीछे आते हैं साकार में। पीछे हमको फिर भी तो नंगा जाना है ना। कभी(कब) जाना है? अरे, वो तो जब खेल पूरा होगा तभी तो नंगा जाएँगे ना घर, ऐसे कैसे जाएँगे! बीच में कोई थोड़े ही जा सकते हैं। नहीं। तो फिर बाप आते हैं, आ करके (...); क्योंकि आत्मा तमोप्रधान बन जाती है। तो बाबा फिर आ करके सतोप्रधान बनाय करके फिर नंगा ही साथ में ले जाएगा। शरीर तो यहाँ ही छूट जाएगा। देखो, नंगा कब तुम आए? 5000 बरस हुआ। अभी 5000 बरस पूरा है, तुमको शरीर छोड़ करके नंगा जाना है, उसके लिए ये युक्ति बता रहे हैं बच्चों को– सन्मुख, सीधा। वो कैनेडी आई, ये अमेरिका की प्रेजीडेन्ट की ज़ाद। जहाँ जाएँगी या कोई कचरा गंद, बॉम्बे में तुम जाओ, वहाँ गंद में कैसे रहते हैं, नाले बहते हैं, झुपड़ियाँ लगी हुई हैं, तभी वो देखेंगी, क्या फर्क है! कहाँ वो अमेरिका की प्रेजीडेन्ट, कहाँ वो, हम हैं तो मनुष्य ना, फर्क तो देखो। वैसे ही ये भारत जब देवी–देवताओं का राज्य है, इसको कहा ही जाता है, सब जाते हैं, ये भारत बहिश्त था, हैविन था, पैराडाइज़ था। इसका अजमेर में भी मॉन्यूमेन्ट बनाकर रखी है ये छोटी–सी। गाते भी हैं कि बरोबर भई द्वारका में सोनी द्वारका थी। क्या थी, सब ऐसे ही कहते रहते हैं। घूमते रहते हैं, फिरते रहते हैं, तीर्थ यात्रा में जाते रहते हैं। देखो, कितना तुमको बाप ने बचाय दिया घर

बैठे। घर इसको कहा जाता है ना। कि बाप को तो यहाँ आना होता है ना। बाप का ये घर है। बाबा कहते हैं– मेरा भारत घर है ना। हाँ, मैं यहाँ आता हूँ ना। यूँ तो मेरा सारी सृष्टि घर है और तुम जानते हो कि मैं आऊँ... एक जगह में तो आऊँगा ना, दस जगह में तो नहीं आऊँगा। आऊँगा तो एक जगह में, तो मैं आता ही भारत में हूँ; परन्तु आता हूँ सबका, सारे वर्ल्ड का कल्याण करने, सारे वर्ल्ड को वर्सा देने। कौन–सा? जीवनमुक्ति का। यानी कोई भी दुःख में नहीं होगा। हम गैरंटी करते हैं कि ये नई दुनियाँ, विनाश के बाद कोई भी दुःखी होगा नहीं। वो दुःखी होगा, वो सुखी होगा, वो शांति में होगा और ये भी तो बुद्धि है जब भारत स्वर्ग था, हैविन था, तो सभी मुक्तिधाम में थे, फिर दुःख कहाँ से आएगा! दुःख की कोई बात ही नहीं रहती है। तो ऐसे होते तुम बच्चों को खुशी स्थायी रहनी चाहिए। हाँ, एक तो भले पुरुषार्थ करते रहो; परन्तु एक तो ये खुशी होनी चाहिए ना कि हम किसकी गोद ली है, किसके बने हैं। तो वो याद नहीं रहते हैं, घड़ी–2 भूल जाने से पीछे अनेक प्रकार की ये खिट–खिटें होती हैं, स्थायी खुशी नहीं रह सकती है और विवेक भी कहता है स्थायी खुशी भी रहे जब कर्मातीत अवस्था को पावें ना। तभी अंत में कहा जाता है कि अतिइन्द्रिय सुख पूछना हो तो इन गोप और गोपियों से पूछो। अंत में, अभी नहीं। अभी तो विवेक भी कहता है अतिइन्द्रिय सुख स्थायी हो नहीं सकता है। पिछाड़ी में, ...होते हैं ना, तभी सुख की होती है– अभी हम पास होते हैं, अभी ट्रान्सफर होंगे। तभी होगा ना बच्ची, बीच में थोड़े ही होगा। जभी पास्ट होने का, एग्ज़ामिनेशन का दिन होता है ना तभी खुशी होती है कि अभी हम ट्रान्सफर होंगे। भई बी०ए० से हाँ एम०ए० में जाएँगे या एम०ए० में फलाना ..... जाएँगे। पढ़ते तो हैं ना उसके लिए। तो खुशी पिछाड़ी में आ करके रहती है। मालूम भी पड़ता है हम कहाँ तक पास हो सकेंगे। ये भी हूबहू ऐसे ही है। तुम आगे चल करके हर एक अपन को जान जाएँगे कि हम कहाँ तक पास होंगे, हम कहाँ.....और तुमको साक्षात्कार होगा पिछाड़ी में। इसलिए बाबा कहते हैं पीछे क्या करेंगी! पीछे पढ़ाई थोड़े ही होगी या सेकण्ड कोर्स दूसरा बरस, तीसरा बरस थोड़े ही पढ़ेंगी। नहीं, पीछे पछताएँगी, रोएँगे, पीटेंगे, होगा कुछ भी नहीं। याद आएगा बाबा हमको कितना समझाते थे, हम क्या–2 करते थे। इतना कहते थे, बहुत समझाया बाबा ने, हम समझा नहीं, अभी ये मेरी रिज़ल्ट हो गई। अब ये कल्प–2 की रिज़ल्ट हो गई। समझा ना! पीछे दुःख बहुत होता है। क्यों(कि) बहुत–2 घाटा पड़ जाता है ना बच्ची। घाटा वाले को दुःख नहीं होता है! पूछो इन व्यापारियों को, जब घाटा होता है तो कितना दुःख होता है। अब एक तो घाटा, दूसरा फिर जखयाना पड़ता है, जेल में जाना पड़ता है, सज़ाएँ खानी पड़ती हैं। मम्मा भी खुश होती है वहाँ। यहाँ से जो गई है वो भी खुश होती है। उनमें और उनमें फर्क तो है ना बच्ची। वो अभी सम्पूर्ण है, वो लिस्ट पर है। वो सम्पूर्ण बन जाएँगी। अभी टाइम है थोड़ा, लिस्ट पर है।

हैलो! मधुबन से बापदादा सभी सेन्टर्स के ब्रह्मामुखवंशावली ब्राह्मण कुलभूषण, स्वदर्शन चक्रधारी बच्चों को आज गुरूवार के दिन दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा, अभी अलग–2 भी देते हैं। बोलती जाओ अभी। (किसी बहन ने कहा– ये टेप बाबा, घाटकोपर जाती है)

हैलो, घाटकोपर! मधुबन से बाबा बात कर रहे हैं और आज गुरूवार है, सबको यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा, अब ये नाम बताते हैं– काकू भाई, विजय, रजनी, मिनाक्षी, सुरेन्दर, बाबू भाई मुरब्बे वाला, मुरब्बे वाले की युगल यहाँ बैठी है। चरणशेर, निर्मला बांधेली, मुक्ता, जैया और हेमा, कन्या और काशी और आदि–2 सभी बच्चों को बाबा का आज बहुत यादप्यार देना और बाबा कहते हैं कि याद की यात्रा को भूलना नहीं। अच्छा, विदाई।

(बहन ने कहा– ये टेप बाबा, बम्बई जाएगी)

हैलो बॉम्बे! मधुबन से बापदादा बच्चों को आज गुरूवार के दिन यादप्यार दे रहे हैं। रमेश, कुमारका, पुष्पशांता, निर्वैर, शांता, ऊषा, नरसिंग (किसी ने कहा–आशा) आशा, नरसिंग और मधु, आनन्द जी, मनु भाई, शरद, जनसुख, महावीर, मनोहर लाल, पपैया और रूकमणि, राधेमाता, कौशल्या, रामी, अमी और मधुबीन नीमू, मुक्ता, जैया पारी आदि–2 सबको यादप्यार देना। ये तो ब्रजेन्द्रा तो उसकी है ना। (बहन ने कुछ कहा) अरे पर ब्रजेन्द्रा के पास है टेप? (किसी ने कहा– हाँ जी) तो तुम लिखा तो नहीं है। (बहन ने कहा– बाबा नीचे है ब्रजेन्द्रा मणि) सारे सेन्टर के, ब्रजेन्द्रा और (बहन ने कहा– झुबू) झुबू, संतोष और वो जो खजूर–वजूर का व्यापारी कौन? (बहन ने कहा–आसूदालाल) आसूदालाल और यशोदा और केसर और आदि–2, अभी कितना नाम लेवें, सब अपने लिए यादप्यार बाबा का स्वीकार करिए। अनिला को ज्ञान पसन्द न।
(बहन ने कहा– बाबा, अहमदाबाद जाती है)
हैलो अहमदाबाद! मधुबन से बापदादा यादप्यार दे रहे हैं आज गुरूवार के दिन। अच्छा, जानकी बेटी, रूकमणि, दमयन्ती, आनन्द किशोर, रानी और वनीता, ...पंजाब और वो भाट, क्या नाम है भाट का? (बहन ने कहा– चंदुलाल) चंदुलाल भाट को और वकील को जिसने बाबा को चिट्ठी लिखी है। नहीं, डाक्टर नहीं, उनको भी यादप्यार देना है। अच्छा, वो वैंकटेश्वरानंद (बहन ने कहा– सरला, लीला और वैंकटलाल) हाँ, सरला, लीला और वैंकटलाल, इन सबको यादप्यार देना। (बहन ने कहा– बाबा, रतिलाल, मणिलाल युगल, ईश्वरलाल) रतिलाल, मणिलाल, ईश्वरलाल युगल इन सबको यादप्यार देना। (बहन ने कुछ कहा) (बहन ने कहा– धीरजलाल) धीरजलाल को भी यादप्यार देना युगल को और कुछ! (बहन ने कहा– शांतिलाल)
(बहन ने कहा– ये टेप बाबा, पुणे जाती है।)
अच्छा हैलो पूना! मधुबन से बापदादा आज गुरूवार के दिन यादप्यार दे रहे हैं। ब्रजशांता, हरदेवी भण्डारी, लीलावती, रूकी, इन्द्रा, लीला, नारायणी, गुल्ली, सत्या की माँ कृष्णा, शीला, खैनी, पार्वती, चम्पा, बाई जी, तेसूमल, फत्तू, अर्जुन, जीवनलाल, जहाँगीर सरदार और आदि–2 सबको यादप्यार देना। बस।
दिल्ली! मधुबन से बापदादा आज गुरूवार के दिन यादप्यार दे रहे हैं। जगदीश जी, राजकुमार, सुन्दरलाल, आत्मप्रकाश, ओमप्रकाश, प्रेमप्रकाश, चेदारामसुन्दरी, रामलुभाया, ओमप्रकाश और सभी बाँधेलियाँ को खास यादप्यार देना। सब माताओं को यादप्यार देना, सभी कुमारियाँ को यादप्यार देना और कमलेश, शीला आदि–2 सबको यादप्यार देना। अच्छा, बाबा अभी विदाई लेते हैं। अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे सौभाग्यशाली इस सृष्टि भर में तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली का पार्ट इस ड्रामा में किसका भी नहीं है; क्योंकि तुम बच्चों की गाया जाता है हीरो एण्ड हीरोइन इस बेहद के वर्ल्ड ड्रामा में। क्यों एक हीरो–हीरोइन? कि राज्य लेती हो फिर गंवाती हो; पर लेती हो इसलिए तुमको हीरो–हीरोइन; क्योंकि सच्च–2 जब गुमाती हो, कौड़ी मिसल बनती हो, जब जीतती तो हीरे मिसल बनती हो। इसलिए हीरो एण्ड हीरोइन यहाँ से नाम निकला हुआ है। ऐसे हीरो एण्ड हीरोइन जैसे मीठे–2 बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग, पीछे आ करके विदाई देंगे।